राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान

प्रस्तावना

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान का वर्ष 2018-2019 का वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा-परीक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । इसमें वर्ष के दौरान संस्थान में सम्पन्न हुई गतिविधियों पर प्रकाश ड़ाला गया है । वर्ष के दौरान संस्थान ने शिक्षण, प्रशिक्षण तथा रोगी परिचर्या गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्ति की है । मानव जाति के कल्याण हेतु संस्थान का प्रचार-प्रसार, प्रगति, विकास तथा इसे समृद्ध बनाने हेतु श्रेष्ठ प्रयास किये गये हैं ।

मुझे यह सूचित करने में अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आयुष मंत्रालय, भारत-सरकार ने राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के विस्तार केन्द्र के रूप में हरियाणा के पंचकुला में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान स्थापित करने के लिए अनुमोदित किया है । प्रस्तावित संस्थान हेतु माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12-2-2019 को इसकी आधारशिला रखी गई । संस्थान के इतिहास में यह एक मील का पत्थर है और गत चार दशकों और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय इकाई के रूप में आयुर्वेदिक शिक्षा, प्रशिक्षण और रोगी देखभाल के क्षेत्र में इसकी विविध गतिविधियों को मान्यता प्रदान करता है । श्रीमाता मनसा देवी श्राइन बोर्ड, पंचकुला द्वारा 20 एकड़ भूमि संस्थान को लीज पर सौंप दी गई है । भारत-सरकार के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के एक उपक्रम मैसर्स वेपकोस लि. को प्रस्तावित संस्थान की स्थापना हेतु परियोजना प्रबंधन परामर्शक नियुक्त कर दिया गया है । प्रस्तावित संस्थान का निर्माण कार्य रक्षा मंत्रालय से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त हो जाने प्रारंभ किया जायेगा ।

संस्थान द्वारा डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करने हेतु डी-नोवो वर्ग में आवेदन कर दिया गया है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस प्रस्ताव पर सक्रियता से विचार किया जा रहा है । एनएएएसी (NAAC) एक्रिडिटेशन हेतु भी संस्थान ने आवेदन किया है । संस्थान का 280 शय्याओंयुक्त मुख्य चिकित्सालय को पहले ही 2016 में एनएबीएच (NABH) एक्रिडिटेशन प्रदान किया जा चुका है ।

आयुष मंत्रालय द्वारा संस्थान को राष्ट्रीय स्तरीय चतुर्थ आयुर्वेद दिवस आयोजित करने का दायित्व संस्थान को सौंपा गया । इसके मुख्य कार्यक्रमों में सम्मिलित थे - कवि सम्मेलन, हिताहार उत्सव, विशिष्ठ चिकित्सा शिविर, नुक्कड़ नाटक, मैराथन (आयुर्वेद के लिए दौड़), दीर्घायु के लिए आयुर्वेद तथा विजेताओं को राष्ट्रीय धन्वन्तरि पुरस्कार का वितरण करना । इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष, विधानसभा श्री ओम बिड़ला, माननीय केन्द्रिय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह, माननीय केन्द्रिय राज्य आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री श्रीपद येसो नाईक, माननीय सांसद श्री रामचरण बोहरा, माननीय आयुर्वेद मंत्री, राजस्थान श्री रघु शर्मा, माननीय विद्यालय श्री महेश जोशी, श्री अशोक लाहोटी, वैद्य राजेश कोटेचा, सचिव(आयुष), श्री पी. के. पाठक, अतिरिक्त सचिव(आयुष), वैद्य के.एस. धीमान, सीसीआरएएस के महानिकशक इत्यादि गणमान्य उपस्थित थे । इस आयोजनों में लगभग 2000 लोग जिनमें आयुर्वेद विशेषज्ञ, अध्येता, अनुसंधानकर्ता, अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्रछात्रों ने सक्रियता से भाग लिया ।

आर्थिक रूप से पिछ़डे वर्ग हेतु आरक्षण नीति के क्रियान्वयन के तहत आयुर्वेदाचार्य स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश क्षमता 125 बढ़ाई गयी है । संस्थान के अध्यापकों द्वारा पीएच.डी. करने हेतु विश्वविद्यालय से अनुमोदन प्राप्त किया गया । 1 वर्षिय अवधि का पंचकर्म तकनिशियन कोर्स प्रारंभ किया गया है । 3 दिन से 45 दिन की अवधि के लघु-अवधि पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गये है जो कि आमजन, व्यावसायियों, शोधार्थियों एवं चिकित्साकों के मध्य अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं ।

संस्थान से स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु विदेशियों की बहुत मांग है । इसके परिणाम स्वरूप संस्थान में निकारागुआ, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, ईरान, सूरीनाम, थाईलैण्ड, रशिया, तंजानिया, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश आदि देशों के छात्रा अध्ययनरत है ।

स्पाइन डायग्नोसिस, चरक संहिता और शिक्षण पद्धति पर कौशल विकास कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । क्रिमी रोग पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया । विभिन्न विषयों पर 8 राष्ट्रीय कार्यशालाओं, सीएमई कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया । गुद-रोग शल्य प्रक्रियाओं पर एक लाइव डेमोंस्ट्रेशन विषयक कार्यशाला भी आयोजित की गई ।

संस्थान द्वारा आयुष मंत्रालय, मलेशिया के यूनिवर्सिटी टुंकू अब्दुल रहमान और नेशनल इनोवेशन फाउण्डेशन, सीसीआरएएस, दत्ता मेघे इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, वर्धा, डीवाई पाटिल डीम्ड यूनिवर्सिटी, मुंबई, महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हैलथ साइंसेज, बीवीजी लाइफ साइंसेज लिमिटेड़, पूणे, हिमालय ड्रग कम्पनी, बीओएचईसीओ मुंबई, श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड़ आदि संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन किये गये हैं । इन अनुसंधान परियोजनाओं से संस्थान द्वारा रू. 450 लाख प्राप्त किये गये हैं ।

रोगी परिचर्या गतिविधियों के अपने कार्यक्रम में आलोच्य वर्ष के दौरान, बहिरंग विभाग में कुल 2,94,453 रोगियों की चिकित्सा की गई जिनमें 1,94,458 नवीन रोगी थे तथा अन्तरंग विभाग में कुल 69,782 रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गयी जिनमें 4,912 नवीन रोगी थे । एस.सी.-एस.पी. स्कीम के तहत संस्थान राजस्थान के अनुसूचित जाति बहुल दर्जनभर जिलों में चल चिकित्सा शिविर भी नियमितरूप से आयोजित कर रहा है । जयपुर शहर में तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में चिकित्सा शिविरों के साथ स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है । वर्ष के दौरान, 79 शिविर आयोजित किये जाकर 42,194 रोगियों को चिकित्सा प्रदान की गयी तथा नि:शुल्क औषधियाँ वितरित की गयी । एस.सी. -एस.पी. स्कीम के तहत, योजना के अन्तर्गत चिह्नित आबादी को चिकित्सा लाभ प्रदान करने हेतु जयपुर जिला के जमवारामगढ़ में एक बहिरंग रोगी विभाग की सुविधाओंयुक्त चिकित्सालय सितम्बर 2019 में प्रारम्भ किया गया है ।

संस्थान की जीएमपी सर्टिफाईड रसायनशाला, चिकित्सालयों तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा फैलोशिप प्रोग्राम की शोध गतिविधियों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु आवश्यक औषधियों का निर्माण कर रही है । वर्ष के दौरान रू. 2,50,21,958/- की लागत से 328 प्रकार की विभिन्न औषधियों (55,813 कि.ग्रा.) का निर्माण किया गया जो कि पिछले वर्ष के उत्पादन से 7,386 कि.ग्रा. अधिक है । चिकित्सालय, शोध आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु संस्थान प्रत्येक वर्ष उत्पादन बढ़ोतरी करने के सभी प्रयास करता रहा है।

पुस्तकालय ऑटोमेशन सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है । पुस्तकालय आरएफआईडी, स्टाफ स्टेशन, थर्मल प्रिंटर, लाइब्रेरी सिक्योरिटी गेट सिंगल आइल, पुस्तकों के लिए लोगो युक्त स्टिकर स्वयं-चिपकने वाला आरएफआईडी टैग, शेल्फ प्रबंधन हेतु आरएफआईडी हैंडहेल्ड रीडर आदि युक्त पुस्तकालय प्रबंधन सॉफटवेयर सिस्टम युक्त है । यह सिस्टम पुस्तकों और प्रकाशनों का उचित और सुरक्षित संचालन और पुस्तकों और प्रकाशनों में किसी भी गड़बड़ी, चोरी और अन्य प्रकार की छेड़छाड़ को भी विफल करेगा ।

पिछले दस माह की अवधि के दौरान, संस्थान द्वारा सीधी भत्ती द्वारा 57 पदों जिनमें शैक्षिक(9) एवं अशैक्षिक(48) भर्तियाँ एवं पदोन्नति द्वारा 5 पदों का भरा गया है । इस प्रकार कुल 62 रिक्त पदों को भरा गया है । 25 और पद जिनमें शैक्षिक(15) एवं अशैक्षिक(10) पद है अखिल भारतीय स्तर पर विज्ञाप्ति किये गये हैं तथा इन पदों को आगामी 4-5 माह में भरा जायेगा । इसके साथ ही संस्थान लगभग सभी खाली पदों को भर लेगा ।

संस्थान में नवीन बहिरंग रोगी विभाग के भवन एवं पशुघर का निर्माण कार्य प्रगति पर है । इसका निर्माण पूर्ण होने पर संस्थान पशुघर का उपयोग कर ड्रग ट्रायल, अनुसंधान आदि गतिविधियाँ प्रारम्भ करेगा तथा नवीन बहिरंग रोगी विभाग के भवन का उपयोग रोगियों के लाभार्थ ओपीडी एवं आईपीडी से सम्बन्धित सेवाओं का विस्तार कर सुविधाऐं प्रदान की जायेगी।

आयुर्वेद के वास्तविक इतिहास एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु संस्थान में पाण्डुलिपिक इकाई एवं ऑडियो-विजूअल संग्रहालय स्थापित किया गया है । इससे छात्रों को आयुर्वेद की अवधारणाओं को सीखने के ढग को बढ़ाने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योबिकी में उन्नत वैज्ञानिक विकास का लाभ उठाकर आयुर्वेद और इसकी संस्कृति के इतिहास के सही अर्थ का प्रचार करना है । इसका उद्देश्य से सीखने के घटक, अनुसंधान विधियों में से अरुचिकर और यांत्रिक पहुलओं को कम करना, आयुर्वेद अनुसंधान के चरणबद्ध वैज्ञानिक विकास की खोज और प्रदर्शन, छात्रों आगंतुकों और विदेशी लोगों के लिए आयुर्वेद के वैज्ञानिक इतिहास की जानकारी प्रदान करना है । यह आयुर्वेद के क्षेत्र में अपने प्रकार

का विश्व का पहला संग्रहालय है । पांडुलिपि इकाई पांडुलिपियों के लिपियों व संरक्षण, महत्त्वपूर्ण संस्करणों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं का संचालन करने के लिए एक श्रेष्ठ ढंग से सुसज्जित राष्ट्रीय मानक पांडुलिपि इकाई है। आयुर्वेद विद्वानों के लिए पांडुलिपि पर नियमित 3 माह का सर्टिफिकेट कोर्स भी शीघ्र ही प्रारम्भ किया जायेगा ।

संस्थान के सम्पूर्ण परिवार ने 1500 से अधिक संख्या में, जिसमें शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी अध्येता छात्र-छात्राऐं एवं रोगी सम्मलित थे ने पुलवामा हमले में जान गवानें वाले हमारे प्यारे बहादुर सैनिकों को श्रद्धांजलि दी गई । संस्थान के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्वानों और छात्रों से एकत्र किये गये रू. 5 लाख इनकी स्मृति में संस्थान में मनाये गये एक समारोह में सीआरपीएफ, जयपुर डिवीजन के कमांडर को सौंपे गये ।

संस्थान आयुर्वेद शिक्षा हेतु उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में जाना जा सके इस हेतु संस्थान में आगामी दिनों में निम्नलिखित विकासात्मक योजनाओं एवं गतिविधियों को प्रस्तावित किया जाना है :-

डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त करना • राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद से प्रमाणीकरण • उत्कृष्टता एवं राष्ट्रीय महत्त्व केन्द्र का दर्जा प्राप्त करना • डब्ल्यू.एच.ओ. कोलेबोरेशन सेन्टर की स्थापना • पंचकुला में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान की स्थापना • विदेशी चिकित्सा और गैर-चिकित्सा पेशेवरों के लिए आयुर्वेदिक एक्सपोजर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना • आयुर्वेद अध्ययन-अध्यापन, प्रशिक्षण, प्रकाशन, अनुसंधान, संकाय एवं छात्र विनिमय के क्षेत्र में देशों/संगठनों से परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग करना • विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/सम्मेलनों का आयोजन करना • रसायनशाला मे उत्पादन में बढ़ाना • शहर स्थित चिकित्सालय का पुनर्निर्माण करना • विदेशी छात्रों हेतु छात्रावास एवं अतिथि गृह का निर्माण आदि ।

इन सभी सेवाओं, सुविधाओं, राष्ट्रीय स्तरीय संस्थान के योग्य बुनियादी ढ़ाँचे के साथ, संस्थान आयुष-विभाग द्वारा तय किये गये उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है विशेषरूप से शिक्षा, प्रशिक्षण तथा रोगी परिचर्यात्मक गतिविधियों का प्रौन्नयन आयुर्वेद को विश्व में चिकित्सा की सशक्त पद्धति के रूप में स्थापित करने की दिशा में कार्यरत है ।

इन विनम्र शब्दों के साथ, मैं, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के वित्तीय वर्ष 2018-2019 के वार्षिक प्रतिवेदन और अंकेक्षित लेखा विवरण प्राधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ ।

प्रो. संजीव शर्मा
निदेशक